Shabar Mantra of Mahakali to Destroy the Enemy
महाकाली शत्रु संहारक शाबर मंत्र

एक व्यक्ति के चाचा ने उसकी सारी सम्पत्ति हड़प ली, और उसे घर से निकाल दिया। उस व्यक्ति ने मां काली के मन्दिर में २१ दिनों तक ११ मालाएं निम्नलिखित साबर मन्त्र की पूर्ण की । कुछ ही दिनों के अन्तराल से उसके चाचा कुसंग में फंसकर दीन-हीन हो गये और साथ ही साथ उनके पैरों में फोड़े हो गये जिसके उसके दोनों पैर गल गये और कुछ समय बाद ही वह परमलोक का वासी हो गया ।

इसका नित्यप्रति क्रम से से १०८ पाठ सरसों के तेल का दीपक जलाकर करें। पाठ करते समय आपका स्वर दीन भाव से युक्त होना चाहिए और पुकार हृदय से।

DR.RUPNATHJI(DR.RUPAK NATH)

पाठ

तुझसे अरज करूं, ऐ हो मात कालिका तुझसे अरज करूं।
मोहि जो सतावे, सुख पाव ना आठों याम वाको तुम भक्ष लेओ, ऐ हो।
...............मेरी मात कालिका! तुझसे अरज करूं ।
हाड़ तो हविष लेओ, खाल को खविष लेओ, गले पहनो मात! आंतन की जालिका........तुझसे अरज करूं।

क्रोध करी धाओ, शीघ्र धाओ मात! मेरे शत्रु (अमुक) को गिराओ मात! वाके रूधिर से नहाओ, टीका लगाओ रक्त लाली का....तुझसे अरज करूं ।

देखके स्वरूप तेरा, योगिनी प्रसन्न होएं। लागे वाके घाव, पाके वाके पावं! वाको अंगहू पिराए, वाको बालक मर जाये....मेरा दुख न सहो अत मात कालिका......तुझसे अरज करूं ।

तुझसे अरज कंरू मेरी मात कालिका, तुझसे अरज करूं ।

DR.RUPNATHJI(DR.RUPAK NATH)